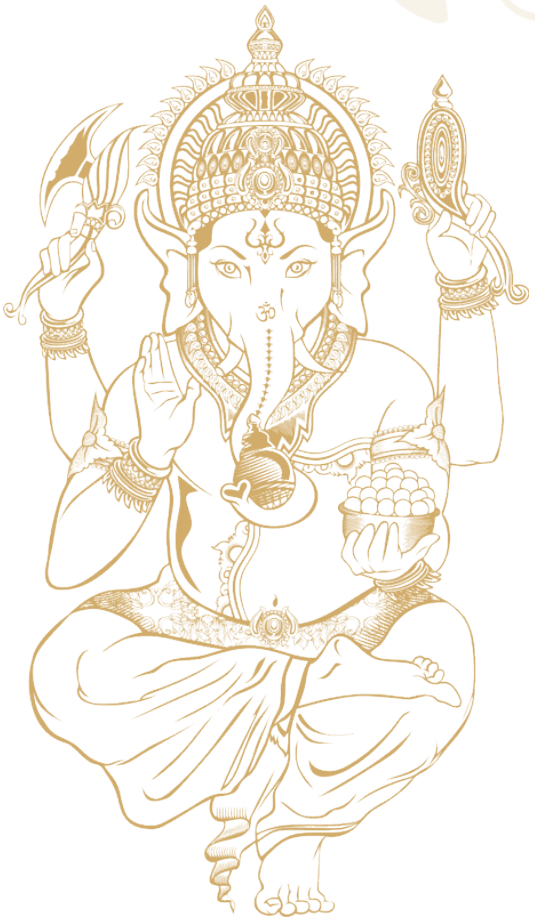

P

D

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121786414

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
29/10/1997	जन्म तिथि	19/02/1999
बुधवार	दिन	शुक्रवार
घंटे 07:35:00	जन्म समय	16:26:00 घंटे
घटी 02:39:37	जन्म समय(घटी)	23:42:56 घटी
India	देश	India
Delhi	स्थान	Delhi
28:39:00 उत्तर	अक्षांश	28:39:00 उत्तर
77:13:00 पूर्व	रेखांश	77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:21:08	स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:31:09	सूर्योदय	06:56:49
17:38:24	सूर्यास्त	18:13:36
23:49:31	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:32

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
चन्द्र 5वर्ष 5मा 14दि	24:43:22	तुला	लग्न	कर्क	14:16:35	बुध 15वर्ष 4मा 20दि
राहु	11:51:43	तुला	सूर्य	कुंभ	06:30:02	शुक्र
14/04/2010	16:03:27	कन्या	चंद्र	मीन	17:55:50	11/07/2021
13/04/2028	27:51:58	वृश्चि	मंगल	तुला	14:24:50	11/07/2041
राहु 25/12/2012	21:30:01	तुला	बुध	कुंभ	18:35:59	शुक्र 09/11/2024
गुरु 20/05/2015	18:58:54	मक	गुरु	मीन	07:34:41	सूर्य 09/11/2025
शनि 26/03/2018	28:41:14	वृश्चि	शुक्र	मीन	03:10:54	चन्द्र 11/07/2027
बुध 13/10/2020	21:38:15	मीन व	शनि	मेष	05:16:45	मंगल 09/09/2028
केतु 31/10/2021	25:10:29	सिंह व	राहु व	कर्क	28:17:01	राहु 10/09/2031
शुक्र 31/10/2024	25:10:29	कुंभ व	केतु व	मक	28:17:01	गुरु 11/05/2034
सूर्य 25/09/2025	11:00:09	मक	हर्ष	मक	19:55:20	शनि 11/07/2037
चन्द्र 27/03/2027	03:27:59	मक	नेप	मक	09:02:56	बुध 11/05/2040
मंगल 13/04/2028	10:31:01	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	16:30:35	केतु 11/07/2041

लग्न-चलित

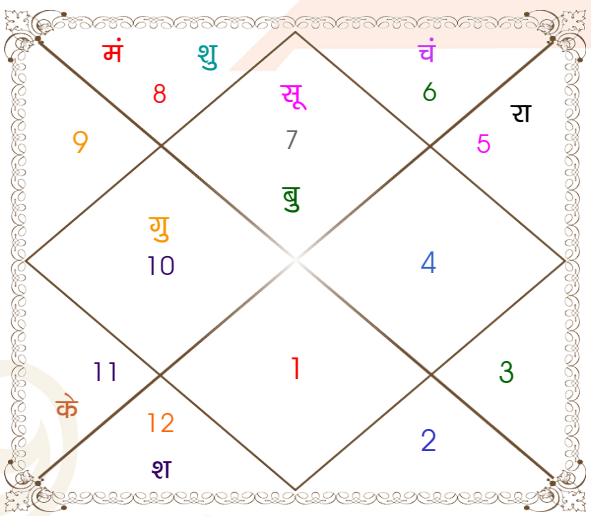

लग्न-चलित

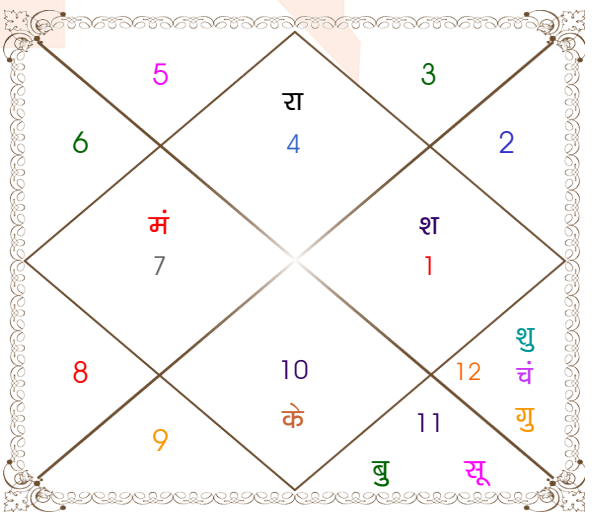

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	प्रत्यारि	साधक	3	1.50	--	भाग्य
योनि	महिष	गज	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	बुध	गुरु	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	कन्या	मीन	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	27.00		

P का वर्ग मेष है तथा D का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार P और D का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

P मंगलीक नही है Dयोंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है।

D मंगलीक है Dयोंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु P कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

P तथा D में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।